किताबों से आगे की पढ़ाई

विशाल गुप्ता

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में प्रवेश की लम्बी लेकिन सुचारू प्रक्रिया कक्षा में प्रवेश करने से लगभग एक बरस पहले शुरू हो जाती है। आवेदन की प्रक्रिया में जीआरआई या जीमैट या टॉफ्ल जैसी किसी मानकीकृत परीक्षा की तैयारी और परीक्षा देना, विश्वविद्यालयों की सूची बनाना, आवेदन तैयार करना, शैक्षणिक प्रमाणपत्रों की आधिकारिक प्रतियां और सिफ़ारिशी पत्र जुटाना, और फीस और अन्य खर्चों के लिए धन की निश्चित व्यवस्था करना शामिल हैं।

इस प्रक्रिया में छात्र आमतौर पर जो गलती करते हैं वे हैं पूरा ध्यान विश्वविद्यालय की रैंकिंग पर केंद्रित कर देना और विश्वविद्यालय के और अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के मिलान पर बिल्कुल ही ध्यान न देना। उदाहरण के लिए, मैसाच्यूसेट्स की हारवर्ड यूनिवर्सिटी के कई प्रोग्रामों की रैंकिंग बहुत ऊंची है, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वह सभी के लिए सही साबित हो। अमेरिका में 4,000 से अधिक विश्वविद्यालय और कॉलेज हैं, इसलिए अपनी आवश्यकता के अनुरूप संस्थान का चुनाव करने में भारतीय छात्रों को विशेष सावधानी बरतनी बहुत ज़रूरी है।

अमेरिका में मेरे छात्र जीवन का अधिकांश भाग (2002-06) यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिज़ूरी में बीता लेकिन इंजीनियरिंग की पढ़ाई के छात्र के तौर पर मैं कुछ समय (2001-02) पैन स्टेट यूनिवर्सिटी में रहा, 2006-08 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ नेब्रास्का में रहा और अब वर्ष 2008 से न्यू यॉर्क में बिंगम्टन यूनिवर्सिटी में पढ़ा रहा हूं।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिज़ूरी (इसे एम या मिज़ू भी कहा जाता है) ने मेरा परिचय मध्य पश्चिमी अमेरिका से करवाया और नज़दीक से अमेरिकी संस्कृति और जीवन को देखने-समझने का अवसर दिया। जब मैंने वहां पढ़ना शुरू किया तो मुझे मालूम नहीं था कि इस विश्वविद्यालय का भारत से लम्बा और ऐतिहासिक सम्पर्क रहा है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिज़ूरी में दशकों से संस्कृत पढ़ाई जाती रही है। यहां तक कि इस विश्वविद्यालय की इयरबुक का नाम भी सूर्य के संस्कृत नाम पर *द सवितर* रखा गया।

उच्च अध्ययन के लिए अमेरिका जाने वाले छात्रों में सबसे बड़ी संख्या भारतीयों की है। 2007-08 में लगभग 94,500 भारतीय छात्र अमेरिका में थे।

यूनिवर्सिटी की डिजिटल लाइब्रेरी वेबसाइट बताती है, "... शोध से पता चलता है कि वर्ष 1894 में छात्रों द्वारा इयरबुक के नामकरण के पीछे शायद कुछ बहुत व्यावहारिक कारण थे। एक कारण तो यही था कि सम्पादकों को इस शब्द का आकार और ध्वनि बहुत पसन्द आए। छात्र सम्पादकों को इसका विचार सम्भवत: सेमिटिक और आधुनिक भाषाओं के प्रोफ़ेसर जेम्स शैनन ब्लैकवैल से मिला जो वर्ष 1886 से वर्ष 1897 तक विश्वविद्यालय में पढ़ाते रहे और संस्कृत के भी अध्येता थे।" *सवितर* का पहला अंक वर्ष 1894 में और अंतिम अंक वर्ष 2006 में छपा।

भारत की स्वतंत्रता के पहले दशक में उड़ीसा में खुले एक कृषि विश्वविद्यालय में यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिज़ूरी की भी भागीदारी थी।

भारतीय और अमेरिकी शिक्षा प्रणालियों में सबसे अधिक स्पष्टता से जो अंतर दिखता है वह है अध्यापकों को अपने पाठ्यक्रमों की कल्पना करने और पढ़ाने में भारत के मुकाबले अमेरिका में मिल रही ज़्यादा स्वतंत्रता। अध्यापक वर्ग को मिली इस स्वतंत्रता का परिणाम शैक्षिक प्रविधियों और पाठयक्रमों में दिखने वाली अधिक रचनात्मकता और नवाचार है।

सभार: विशाल गुप्ता

एक और बड़ा अंतर यह है कि अमेरिकी छात्रों को सामान्यत: फास्ट फूड रेस्तरांओं और डिपार्टमेंटल स्टोरों में कुछ अंशकालिक काम करने का अनुभव होता है। दूसरी ओर अन्य बहुत से देशों के छात्रों की ही तरह भारतीय छात्रों को भी स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई के दौरान व्यावहारिक स्थितियों में कामकाज का अनुभव नहीं मिला होता। इसका परिणाम यह होता है कि अमेरिकी छात्र सैद्धांतिक अवधारणाओं को व्यावहारिक स्थितियों से जोड़ने में कुशल होते हैं जबकि भारतीय छात्र मात्रात्मक और गणितीय कौशल के मामले में आगे होते हैं जिन्हें विकसित करने में समय और अभ्यास की ज़रूरत होती है।

अमेरिका में रहते मैंने पाया कि शुरू में तो लोग भारत को दो कारणों से जानते थे : ताजमहल और महात्मा गांधी। हाल के बरसों में इस सूची में बेंगलूर और आउटसॉर्सिंग भी जुड़ गए हैं। मुझे यह देखकर भी झटका लगता है कि यहां आने वाले भारतीय भारत के बारे में कितना कम जानते हैं। अक्सर वे भारत के बारे में पूछे जा रहे प्रश्नों के उत्तर समझदारी से नहीं दे पाते। शायद इसका कारण भी अमेरिकी और भारतीय शिक्षा प्रणालियों के बीच का एक महत्वपूर्ण अन्तर है। भारत में उच्च

ज़्यादा जानकारी के लिए:

स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू यार्क -बिंगम्टन

http://www2.binghamton.edu/

द यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिज़ूरी

http://www.missouri.edu/

मिज़ू की खोई यादें

http://www.voxmagazine.com/stories/2009/07/15/mizzous-missing-memories/

डैन मिल © यू. एम. इन्फ़ॉर्मेशन, यू.एम.

साभार: विकिमीडिया

ऊपर: यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिज़ूरी के कैंपस में प्रवेश के इच्छुक छात्र टूर गाइड के साथ।

बाएं: न्यू यॉर्क में बिंगम्टन यूनिवर्सिटी।

शिक्षा में अक्सर अपने विषय में गहरा अध्ययन शामिल होता है। अध्ययन के बाकी कोर्स भी उसी विषय से जुड़े होते हैं। लेकिन अमेरिका में स्नातक स्तर पर शिक्षा का अर्थ है कई विभिन्न, अक्सर ही एक-दूसरे से असंबद्ध विषयों के कई कोर्स और अध्ययन के मुख्य क्षेत्र से जुड़े कुछ कोर्सों की पढ़ाई। इसलिए भारतीय छात्रों के लिए अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र के अलावा भी अन्य चीज़ों के बारे में पढ़कर ज्ञान का एक व्यापक आधार प्राप्त करना महत्वपूर्ण है।

विदेशों में पढ़ रहे भारतीय छात्रों से अपेक्षा रखी जाती है कि वे भारत के बारे में जानने में स्थानीय लोगों की सहायता कर पाएंगे। लेकिन इसके साथ ही उन्हें स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली के बारे में जानने का सक्रिय प्रयास भी करना चाहिए। इस संदर्भ में वर्ष 1907 में अमेरिका में कृषि की पढ़ाई कर रहे अपने दामाद नगेन्द्र नाथ गांगुली को लिखे कविकुल गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर के पत्र का प्रस्तुत अंश महत्वपूर्ण है:

''स्थानीय लोगों से मेलजोल रखना तुम्हारी शिक्षा का अंग है। सिर्फ खेती के बारे में जान लेना ही काफी नहीं है, तुम्हें अमेरिका को भी जानना चाहिए। हां, अगर अमेरिका को जानने की प्रक्रिया में कोई अपनी पहचान खोने लगे और हर भारतीय आदत और चीज के लिए हिकारत का भाव रखने वाला व्यक्ति बनने लगे तब तो ताला लगाकर अपने ही कमरे में बंद रहना ठीक होगा।''

विदेश में रह चुके ज्यादातर लोग रवीन्द्रनाथ टैगोर की सलाह की समझदारी की गवाही दे सकते हैं। दुर्भाग्य से अमेरिका में रह रहे बहुत से छात्र एकदम ही अतिवादी ढंग से काम लेते हैं। वे या तो स्थानीय लोगों से एकदम ही अलग-थलग रहते हैं, या फिर अपनी पहचान और जड़ों को भुलाकर हर तरह से अमेरिकी बनने पर तुले रहते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर की सलाह है कि छात्रों के लिए सही यही है कि वे अपनी पहचान के केंद्रीय तत्वों को बनाए रखें और अमेरिका की स्थानीय संस्कृति का विवेकपूर्ण ढंग से विश्लेषण कर उसके तर्कसंगत तत्वों को ही अपनाएं।

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में प्रवेश की लम्बी लेकिन सुचारु प्रक्रिया कक्षा में प्रवेश करने से लगभग एक बरस पहले शुरु हो जाती है।

***विशाल गुप्ता** नई दिल्ली के हैं और स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू यार्क-बिंगम्टन के स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट में स्ट्रेटेजी के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं।*